पाठ 20

व्यंजनांत नपुंसंक लिंग संज्ञाएँ और विशेषण, कर्मवाच्य का कृत् प्रत्यय त और कर्तृवाच्य का कृत् प्रत्यय तवत्, मित्र को पत्र।

20.1 सं. व्यंजनांत नपुंसकलिंग संज्ञाएँ– पिछले पाठ में हमने देखा था कि किस प्रकार हम व्यंजनांत पुंलिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाओं के केवल पाँच रूपों को याद करके सात विभक्तियों और तीन वचनों में उनके रूप बना सकते हैं। परन्तु व्यंजनांत नपुंसकलिंग संज्ञाओं में थोड़ा अंतर होता है। नपुंसकलिंग में द्वितीया विभक्ति के सभी रूप प्रथमा विभक्ति के समान होते हैं। इसलिए, हम द्वितीया के बहुवचन से अन्य रूप नहीं बना सकते। इसलिए हमें यहाँ छह रूपों को याद करना होगा। ये रूप हैं 1-1, 1-2, 1-3, 3-1, 3-2 और 7-3। यहाँ द्वितीय विभिक्ति द्विवचन के बजाय तृतीया विभक्ति के एकवचन (3-1) को अलग से याद करके उससे दूसरे रूप बनाए जा सकते हैं। **कर्मन्** (कार्य, चेष्टा) और **मनस्** (मन) नपुंसकलिंग संज्ञाएँ है। इनके पूरे रूप नीचे दिए हैं:

	कर्मन्			**मनस्**		
	एकव.	द्विवचन	बहुवचन	एकव.	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**कर्म**	**कर्मणि**	**कर्माणि**	**मन:**	**मनसी**	**मनांसि**
द्वितीया	"	"	"	"	"	"
तृतीया	**कर्मणा**	**कर्मभ्याम्**	कर्मभिः	**मनसा**	**मनोभ्याम्**	मनोभिः
चतुर्थी	कर्मणे	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पंचमी	कर्मणः	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
षष्ठी	कर्मणः	कर्मणोः	कर्मणाम्	मनसः	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	कर्मणि	कर्मणोः	**कर्मसु**	मनसि	मनसोः	मनःसु

मनोभ्याम् (3.2) और **मनःसु** (7-3) परस्पर संबंधित है। **मनोभ्याम्** में पहले **मनस्** का अंतिम **स्** विसर्ग में बदल जाता है फिर घोष व्यंजन **भ्** से पूर्व विसर्ग (:) **ओ** में बदल जाता है। **मनःसु** में **मनस्** के अंत वाला **स्** विसर्ग में तो बदल जाता है परन्तु आगे यह **ओ** में नहीं बदलता क्योंकि इसके बाद घोष व्यंजन नहीं है। इसलिए **मनस्** का सप्तमी के बहुवचन का रूप **मनःसु** है। यह नियम समान रूप से सभी सकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं पर लागू होता है। यदि एक बार आप **कर्मन्** और **मनस्** के पाँच रूपों (प्रथमा के तीनों और तृतीया के एकवचन और द्विवचन के दो रूपों) को याद करलें तो आप पुंलिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाओं की तरह 3-1 (**कर्मणा, मनसा**) और 3-2 (**कर्मभ्याम्, मनोभ्याम्**) की सहायता से अन्य रूप बना सकते हैं। यदि आपको संधि के नियम नहीं आते तो आपको 7-3 को भी याद करना होगा।

20.2 सं. व्यंजनांत नपुंसकलिंग विशेषण – नंपुसकलिंग में व्यजनांत विशेषणों के

रूप भी सामान्य रूप से नपुंसकलिंग की संज्ञाओं की तरह चलते हैं। हम नीचे नपुंसकलिंग की कुछ संज्ञाओं और विशेषणों के ऊपर बताए गए सीमित (पाँच-पाँच) रूप दे रहे हैं। आप उनके पूरे रूप बनाने का अभ्यास कीजिएः

		1.1	1.2	1.3	3.1	3.2
जगत्	(संसार)	जगत्	जगती	जगन्ति	जगता	जगद्भ्याम्
महत्	(बड़ा, वि.)	महत्	महती	महान्ति	महता	महद्भ्याम्
धनवत्	(धनी)	धनवत्	धनवती	धनवन्ति	धनवता	धनवद्भ्याम्
चर्मन्	(चमड़ी)	चर्म	चर्मणी	चर्माणि	चर्मणा	चर्मभ्याम्
ब्रह्मन्	(ब्रह्म)	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्
नामन्	(नाम)	नाम	नामनी	नामानि	नाम्ना	नामभ्याम्
शिरस्	(सिर)	शिरः	शिरसी	शिरांसि	शिरसा	शिरोभ्याम्
वचस्	(शब्द, कथन)	वचः	वचसी	वचांसि	वचसा	वचोभ्याम्
सरस्	(तालाब)	सरः	सरसी	सरांसि	सरसा	सरोभ्याम्
यशस्	(यश)	यशः	यशसी	यशांसि	यशसा	यशोभ्याम्
तपस्	(तपस्या)	तपः	तपसी	तपांसि	तपसा	तपोभ्याम्
अहन्	(दिन)	अहः	अहनी	अहानि	अह्ना	अहोभ्याम्
बलिन्	(ताकतवर)	बली	बलिनी	बलीनि	बलिना	बलिभ्याम्

टिप्पणी: नामन् संज्ञा के 1-2, 2-2 और 7-1 में क्रमशः **नाम्नी, नाम्नी** और **नामनि** और **अहन्** के क्रमशः **अह्नी, अह्नी, अह्नि** वैकल्पिक रूप बनते हैं। **महत्** के 1-3 में दिए अनियमित रूप **महान्ति** पर भी ध्यान दें। ऊपर दिए गए नियम के अनुसार **शिरस्, वचस्, सरस्, यशस्** और **तपस्** के सप्तमी के बहुवचन के रूप क्रमशः **शिरःसु, वचःसु, सरःसु, यशःसु और तपःसु** बनेंगे।

20.3 अ. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और इनका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. सः मनसा वाचा कर्मणा पवित्रः विद्यते। 2. तस्य मनसि वाचि कर्मणि च एकरूपता वर्तते। 3. अस्माभिः अस्मिन् जगति तदेव कर्म कर्तव्यं येन सर्वेषां हितं भवेत्। 4. अस्य जगतः सर्वे धनिनो जनाः अपि सदैव सुखिनः न भवन्ति। 5. तेऽपि बहुधा[1] दुःखमनुभवन्ति। 6. न वित्तोन[2] तर्पणीयो[3] मनुष्यः, एतद् उपनिषदो वचः। 7. महतां यशः[4] सर्वासु दिक्षु प्रसरति[5]। 8. मनुष्यः सत्कर्मभिः[6] यशो लभते। 9. मनसाऽपि हिंसा न कर्तव्या। 10. सर्वं खलु[7] इदं ब्रह्म, इति वेदान्तस्य सूत्रम्। 11. अस्मिन् जगति यत् किंचिदपि दृश्यते तत् सर्वं ब्रह्म एव, इति अस्य सूत्रस्य अर्थः। 12. अयमात्मा ब्रह्म, इति अपि वेदान्तस्य सूत्रम्। 13. मनुष्यस्य अंतरे[8] स्थितः आत्मा ब्रह्मणः एव अंशः। 14. अयं वेदान्तस्य सिद्धान्तः।

(**शब्दार्थः**- 1. प्रायः, 2. धन से, 3. संतुष्ट करने योग्य, 4. प्रसिद्धि, 5. फैलती है, 6. अच्छे कामों से, 7. निश्चय से, 8. हृदय में)

20.4 क्रि. कर्मवाच्य का कृत् प्रत्यय त। इससे पहले 16 वें, 17 वें और 18 वें पाठ

में **कृत्** प्रत्यय **त्वा, तुम्** तथा **तव्य, अनीय, य** और **तुम्** के बारे में पढ़ चुके हैं। आइए, अब कर्मवाच्य के महत्वपूर्ण **कृत्** प्रत्यय **त** के बारे में पढ़ें। इसकी रचना धातु के साथ **त** जोड़कर की जाती है। कहीं-कहीं यह **त-ध** या **न** में बदल जाता है। **सेट्** धातुओं में **त** से पहले **इ** जुड़ता है। चुरादिगण की धातुओं के स्वरों को गुण और वृद्धि होते हैं। **त** से बनने वाले कृदन्त रूपों की रचना **त्वा** से बने रूपों में **त्वा** के स्थान पर **त** रख कर भी की जा सकती है। **त** प्रत्यय से बने रूपों के कुछ उदाहरण आगे दिए हैं। इनमें अनियमित रूपों को तारांकित कर दिया गया है: –

कथ्-	कथित	**दह्-**	*दग्ध	**भू-**	भूत
कृ-	कृत	**दा-**	*दत्त	**मन्-**	*मत
चिन्त्-	चिन्तित	**दृश्-**	दृष्ट	**मुच्-**	मुक्त
चुर्-	चोरित	**नी-**	नीत	**लभ्-**	*लब्ध
छिद्-	*छिन्न	**पठ्-**	पठित	**लिख्-**	लिखित
जन्-	*जात	**पत्**	पतित	**वच्-**	*उक्त
त्यज्-	त्यक्त	**पा-**	*पीत	**श्रु-**	श्रुत
दण्ड्-	दण्डित	**भक्ष्-**	भक्षित	**सृज्-**	*सृष्ट

कृत प्रत्यय **त** से बनने वाले शब्दों के रूप अकारान्त पुंलिंग और नपुंसकलिंग संज्ञाओं की तरह चलते हैं। स्त्रीलिंग में इन शब्दों के साथ **आ** जोड़ दिया जाता है। तब इनके रूप आकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं की तरह चलते हैं। **कृत्** प्रत्यय **त** का प्रयोग विशेषण और समापिका क्रिया दोनों रूपों में होता है, इसलिए यह संस्कृत व्याकरण की एक महत्त्वपूर्ण संरचना है। इसका प्रयोग मुख्यतः निम्नलिखित प्रकार से होता है।

i) विशेषण के रूप में **त** प्रत्यय से बने शब्दों की अन्विति उस संज्ञा से होती है जिसकी ये विशेषता बताते हैं:

पठितं पुस्तकं रम्यम् आसीत् –(मेरे द्वारा) पढ़ी गई पुस्तक सुन्दर थी।

दण्डिता: चौरा: कारागरे सन्ति –सजा पाए हुए चोर जेल में हैं।

ii) सकर्मक क्रियाओं से निर्मित यह **कृत्** प्रत्यय कर्मवाच्य में समापिका क्रिया की तरह प्रयुक्त होता है और इसकी अन्विति कर्म से होती है जो कर्ताकारक में होता है। कर्तृवाच्य का कर्ता यहाँ करण कारक में बदल जाता है:

मया दुग्धं पीतम् –मेरे द्वारा दूध पिया गया।

बालिकाभि: गृहाणि भूषितानि –लड़कियों के द्वारा घर सजाए गए।

अद्य अस्माभि: तत् चलचित्रं दृष्टम् –आज हमारे द्वारा वह फ़िल्म देखी गई।

तेन मार्गे एक: सर्प: दृष्ट: –उसने रास्ते में एक साँप देखा।

iii) गत्यर्थक अकर्मक क्रियाओं से निर्मित कर्मवाच्य के **त** कृदन्त का प्रयोग कर्तृवाच्य में समापिका क्रिया की तरह होता है और उसकी अन्विति कर्ता से होती है:

सः अद्य स्वग्रामं गतः —वह आज अपने गाँव गया।
ते नगरात् आगताः —वे शहर से आ गए।
वृक्षेभ्यः सर्वाणि पत्राणि पतितानि —पेड़ों से सब पत्ते गिर गए।
अस्माकं देशे बहवः महान्तः राजानः जाताः—हमारे देश में बहुत-से बड़े राजा हुए हैं।

iv) इस कृदंत की नपुंसकलिंग की प्रथमा विभक्ति, एकवचन का प्रयोग भाववाच्य की समापिका क्रिया के रूप में होता है, तब कर्ता करण कारक में रहता है:
तेन/तया हसितम् —वह हूँसा/हूँसी।
शिशुना/शिशुभिः रुदितम् —बच्चे रोए।

v) नपुंसकलिंग एकवचन में त कृदन्त का प्रयोग धातु के भाव का बोध कराने वाली भाववाचक संज्ञा के रूप में भी होता है:
तस्य कथितं विश्वसनीयम् —उसका कथन विश्वास के योग्य है।
तस्याः हसितं रम्यम् —उसकी हँसी सुंदर है।

20.5 कर्तृवाच्य का कृत प्रत्यय तवत् —इस प्रत्यय से बने शब्दों का निर्माण **त** के स्थान पर **तवत्** रखकर किया जा सकता है: **गत- गतवत्, पठित- पठितवत्** आदि। इससे हमें इस कृदन्त के नपुंसकलिंग रूप मिलते हैं। इनके पुंलिंग और स्त्रीलिंग रूप बनाने के लिए **वत्** को क्रमशः **वान्** और **वती** में बदल दिया जाता है, जैसे- **गतवत्-गतवान्-गतवती।** इनके रूप उन संज्ञाओं की तरह चलते हैं जिनकी ये विशेषताएँ बताते हैं जैसे—पुंलिंग के रूप (भगवान्) नपुंसक लिंग के **धनवत्** और स्त्रीलिंग के रूप (**नदी**) संज्ञाओं की तरह चलते हैं। **तवत्** से बनने वाले कृदन्त का प्रयोग भी विशेषण और समापिका क्रिया की तरह होता है।

i) विशेषणरूप में **तवत्** की अन्विति इसके विशेष्य के साथ होती है:
अहम् आगतवन्तम् अतिथिम् अपश्यम् — मैंने आए हुए मेहमान को देखा।
गतवती बालिका पुनः आगच्छत् — गई हुई लड़की फिर आ गई।

ii) समापिका क्रिया के रूप में इसका प्रयोग अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाओं के साथ केवल कर्तृवाच्य में होता है और इसकी अन्विति कर्ता के साथ होती है:
सः बालकः हसितवान् — वह लड़का हँसा।
सा बालिका हसितवती —वह लड़की हँसी।
ते बालकाः हसितवन्तः —वे लड़के हँसे।
ताः बालिकाः हसितवत्यः —वे लड़कियाँ हँसीं।

टिप्पणी: बाद के संस्कृत साहित्य में भूतकाल (लङ्) के तिङन्त धातुरूपों की अपेक्षा कृदन्त रूपों का प्रयोग समापिका क्रिया के रूप में कहीं अधिक होने लगा। आपको संस्कृत में इनका प्रयोग बार-बार मिलेगा। आप भी अपने भूतकाल के वाक्यों में कृदन्त रूपों का प्रयोग कर सकते हैं, इसलिए आप इन पर विशेष ध्यान दें।

20.6 नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और इनका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. मया तानि सर्वाणि पुस्तकानि पठितानि। 2. अपि त्वया तस्याः पत्रस्य उत्तरं लिखितम्? 3. न, अहं इदानीं यावत्[1] न लिखितवान्, किन्तु अधुना लेखिष्यामि। 4. अद्य अस्माकं कक्षायां बहवः छात्राः बहून् प्रश्नान् पृष्टवन्तः। 5. अस्माकं शिक्षिका तेषाम् सर्वेषाम् उत्तराणि दत्तवती। 6. अपि युष्माकम् अतिथयः आगताः? 7. आम्, ते अद्य प्रातः आगतवन्तः। 8. तेनात्र सर्वाणि कार्याणि सम्यक्[2] कृतानि। 9. सः स्वजीवने स्वपत्नीं कदापि न निन्दितवान्। 10. सा अपि स्वपतिं कदापि न निन्दितवती। 11. अस्मिन् विषये भवद्भिः किं मंत्रितम्? 12. वयमस्मिन् विषये किमपि न मंत्रितवन्तः। 13. बालकैः क्षिप्तः[3] कन्दुकः[4] तेषां गृहे पतितः। 14. बालकाः तेषां गृहं गत्वा क्षमां याचितवन्तः कन्दुकं च पुनः आनीतवन्तः। 15. अपि कक्षायां पठिताः पंचदश श्लोकाः युष्माभिः स्मृताः? 16. वयं दश श्लोकान् स्मृतवन्तः, अधुना पंच एव स्मर्तव्याः। 17. अस्माभिः खादितानि सर्वाणि फलानि मधुराणि आसन्। 18. सा मह्यं बहूनि पुस्तकानि प्रेषितवती। 19. वयं सर्वाः ह्यः सायंकाले तस्याः नृत्यं दृष्टवत्यः। 20. अद्य सभायां सर्वैः वक्तृभिः तस्य प्रशंसा कृता।

(**शब्दार्थ**: —1. इदानीं यावत् —अब तक, 2. अच्छी तरह से, 3. फेंकी हुई, 4. गेंद)

20.7 अ. मित्राय पत्रम्

प्रिय मित्र आकिको,

इदानीं वसन्ते ऋतौ सर्वत्र साकुरापुष्पाणि विकसितानि। ऋतुः अयं तव हृदये अपि प्रसन्नतां जनयेत् इति प्रार्थनां करोमि। अद्य अहम् अति प्रसन्ना अस्मि। मम प्रसन्नतायाः कारणम् अपि अति विशेषः वर्तते। अद्य मया संस्कृतस्य विंशतितमः पाठः पठितः। एषः अवसरः मह्यं महान् आनन्ददायकः[1]। पूर्वम् अहं संस्कृतभाषा कठिना अस्ति, इति चिन्तितवती। परं शनैः.शनैः मया ज्ञातं यत् संस्कृतभाषा अति रुचिरा[2] अस्ति। अधुना मह्यं संस्कृतं बहु रोचते।

अस्माभिः संस्कृतस्य अध्ययनं एकवर्षपूर्वम् एव प्रारब्धम्[3]। सर्वप्रथमं वयं संस्कृतस्य अध्ययनाय देवनागरी लिपिं शिक्षितवत्यः। तदा क्रमशः[4] संस्कृतस्य शब्दाः वाक्यानि च अस्माभिः शिक्षितानि। इदानीं यावत् अस्माभिः संस्कृते पंच रम्याः कथाः पठिताः। तथा च बहवः श्लोकाः अपि अस्माभिः पठिताः। संस्कृतस्य श्लोकाः मह्यं भृशं रोचन्ते। संस्कृत कक्षायां वयं सर्वे अति आनन्दम् अनुभवामः।

भविष्ये अहं संस्कृते भगवद्गीतां, योगसूत्रं, महायानबौद्धधर्मस्य च सूत्राणि पठितुम् इच्छामि।

इदानीम् अहं संस्कृते सरलानि वाक्यानि लेखितुम् अपि समर्था। अतः इदं पत्रं संस्कृते लिखामि। भवती अपि संस्कृतभाषायां स्वम् उत्तरं प्रेषयतु। भवत्यः पत्रं संस्कृते प्राप्य अति प्रसन्ना भविष्यामि।

सस्नेहा भवदीया
तोको

(**शब्दार्थ**: —1. खुशी देने वाला, 2. अच्छी लगने वाली, 3. प्रा रम् त्र शुरु करना, 4. धीरे-धीरे)

अभ्यासों के उत्तर

20.3 अ 1. वह मन, वचन और कर्म से पवित्र है। 2. उसके मन, वचन और कर्म में एकरूपता है। 3. हमें इस संसार में वही काम करना चाहिए जिससे सब की भलाई हो। 4. इस संसार के सब धनी लोग भी हमेशा सुखी नहीं होते। 5. वे भी बहुत बार दुख का अनुभव करते हैं। 6. धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं होती- यह उपनिष्द् का वचन है। 7. महापुरुषों का यश सभी दिशाओं में फैलता है। 8. मनुष्य अच्छे कर्मों से यश प्राप्त करता है। 9. (हमें) मन से भी हिंसा नहीं करनी चाहिए। 10. 'निश्चय ही यह संपूर्ण संसार ब्रह्म है', यह वेदान्त का सूत्र है। 11. इस दुनिया में जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब ब्रह्म ही है, यह इस सूत्र का अर्थ है। 12. यह आत्मा ब्रह्म है यह भी वेदान्त का सूत्र है। 13. मनुष्य के हृदय में स्थित आत्मा ब्रह्म का ही अंश है। यह वेदान्त का सिद्धान्त है।

20.6 मेरे द्वारा वे सब पुस्तकें पढ़ी गईं । 2 क्या तुमने उसके पत्र का उत्तर लिख दिया? 3. नहीं, अभी तक मैने नहीं लिखा परन्तु अब लिखूँगा। 4 आज हमारी कक्षा में बहुत.से छात्रों ने बहुत से प्रश्न पूछे। 5. हमारी अध्यापिका ने उन सबके उत्तर दिए। 6. क्या आपके अतिथि आ गए? 7. हाँ, वे आज सुबह आ गए। 8. उसने यहाँ अपने सब काम अच्छी तरह किए। 9. उसने अपने जीवन में कभी भी अपनी पत्नी की निन्दा नहीं की। 10. उसने भी अपने पति की कभी निन्दा नहीं की। 11. इस बारे में आपके द्वारा क्या सलाह की गई? 12. हमने इस बारे में कुछ भी सलाह नहीं की। 13. लड़कों के द्वारा फेंकी हुई गेंद उन (दोनों) के घर में गिरी। 14. लड़कों ने उनके घर जाकर क्षमा माँगी और गेंद फिर ले आए। 15. क्या आपने कक्षा में पढ़े हुए पन्द्रह श्लोक याद कर लिए? 16. हमने दस श्लोक याद कर लिए हैं, अब पाँच और याद करने हैं। 17. हमारे द्वारा खाए गए सभी फल मीठे थे। 18. उसने मुझे बहुत.सी पुस्तकें भेजीं। 19. हमने कल शाम को उसका नृत्य देखा। 20. आज सभा में सभी वक्ताओं के द्वारा उसकी प्रशंसा की गई।

20.7 मित्र को पत्र

प्रिय मित्र आकिको,

अब वसन्त ऋतु में सभी जगह साकुरा के फूल खिले हुए हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह ऋतु तुम्हारे हृदय में भी प्रसन्नता की भावना उत्पन्न करे। आज मैं बहुत खुश हूँ। मेरी खुशी का एक बहुत खास कारण है। आज मैंने संस्कृत भाषा का बीसवाँ पाठ पढ़ा। यह मेरे लिए अत्यधिक खुशी का मौका है। पहले मैं सोचती थी कि संस्कृत भाषा कठिन है। परन्तु धीरे-धीरे मुझे मालूम हो गया कि संस्कृत भाषा बहुत रोचक है। अब मुझे संस्कृत भाषा बहुत अच्छी लगती है।

हमने एक साल पहले ही संस्कृत पढ़ना शुरू किया था। सबसे पहले हमने संस्कृत पढ़ने के लिए देवनागरी लिपि सीखी। उसके बाद धीरे-धीरे हमने संस्कृत के शब्द और वाक्य सीखे। अब तक हमने संस्कृत की पाँच सुन्दर कहानियाँ पढ़ ली हैं। इसके साथ हमने संस्कृत के बहुत से श्लोक भी पढ़े हैं। मुझे संस्कृत के श्लोक बहुत पसन्द हैं। हमें संस्कृत की कक्षा में बड़ा मजा आता है।

भविष्य में मैं भगवद्गीता, योग-सूत्र और बौद्ध धर्म की महायान शाखा के सूत्र संस्कृत में पढ़ना चाहती हूँ। अब मैं संस्कृत में सरल वाक्य लिख सकती हूँ इसलिए यह पत्र संस्कृत में लिख रही हूँ। आप भी अपना उत्तर संस्कृत भाषा में भेजें। आपका उत्तर संस्कृत में पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।

स्नेह के साथ आपकी

तोको